युगांतकारी कलाकार जयशंकर प्रसाद

- डॉ. सुमा टी रोनाडवर

हिंदी साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों में से एक साहित्यकार ऐसे हैं जिन्हें वाणी के वरद पुत्र कहा गया है। जिन्होंने अंतकरण की भावुकता को लेकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा को मां सरस्वती की सेवा में अर्पित कर साहित्य की आराधना की है, वे युगांतकारी कलाकार या रचनाकार है जयशंकर प्रसाद !

जयशंकर प्रसाद ने हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा में अपनी बहुमुखी उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचय दिया जैसे काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास और निबंध आदि। बीसवी शताब्दी के साहित्य -क्षेत्र में प्रसाद जैसी दिगन्त व्यापिनि प्रतिभा से युक्त अन्य रचनाकार कम ही दिखाई देते हैं। वे वास्तविक अर्थ में हिंदी के रवींद्रनाथ थे। जयशंकर प्रसाद का साहित्य अतीत की पृष्ठभूमि में वर्तमान के लिए स्वर्णीय संदेश लेकर उपस्थित हुआ है। उनके व्यक्तित्व पर उनकी पारिवारिक स्थिति का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने हिंदी साहित्य को अपनी एक से एक महान कृतियाँ अर्पित कर उसे समृद्ध बनाया है। जिस तरह हिंदी साहित्य सृष्टि में कबीर , सूर जायसी तथा तुलसी की परंपरा रही है। उसी तरह आधुनिक काल में भारतेंदु महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद्र और जयशंकर प्रसाद का अतुलनीय योगदान रहा है।

"भरा हुआ मुँह , कांति युक्त गौरवर्ण, चश्मे और माथे की रेखाओं की गंभीरता उनकी सरल हँसी के साथ घुल मिलकर दिव्य रूप धारण करती है।"प्रसाद के इस बाह्य वर्णन से उनके विराट व्यक्तित्व का अनुमान लगा सकते हैं क्योंकि मनुष्य के विकास और प्रगाति में उसके व्यक्तित्व का बहुत बड़ा हाथ होता है। प्रसाद के व्यक्तित्त्व पर उनकी पारिवारिक स्थिति का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। शिवपूजन सहाय जयशंकर प्रसाद के बारे में कहते हैं- स्मित पूर्वाभिभाषी प्रसाद जी का व्यक्तित्व विशिष्ट गुणों के कारण गुणों के कारण बड़ा हृदय ग्राही था। उनकी सरल वाणी की मधुरिमा उनके मुक्त को हास्य की विमलता, उनके स्वस्थ शरीर की गठन उनके सुखदशील की आर्यता, उनके स्वर्जित पांडित्य की प्रौढ़ता , उनके सहिष्णु स्वभाव की कुलीनता उनकी गद्य फला स्मृति शक्ति की प्रखरता उनके सामाजिक जीवन की उच्चता उनके निष्कपट व्यवहार की शालीनता, उनकी निस्पृह साहित्य सेवा की महत्ता सब ने मिलकर उनके व्यक्तित्व को विशद बनाया था। वैसा मोहक और उत्प्रेरक व्यक्तित्व आज हिंदी जगत में सावधानता से टटोलना पड़ेगा।प्रसाद जी में सात्विक गुणों की भरमार थी। इसलिए उनकी गिनती असाधारण कोटि में की जाती है। प्रसाद मूलतः धार्मिक और उत्सव प्रिय स्वभाव के थे। संगीत प्रेम उनके व्यावसायिक तथा साहित्यिक जीवन का रंग लाता है। महादेवी वर्मा ने अद्भुत शब्दों में उनके व्यक्तित्व को व्यक्त किया है -प्रसाद के रूप में हिंदी ने शिव और वाणी दोनों का प्रसाद एक साथ पिया है। शिव के समान ही प्रसाद का ज्ञान विष को अमृत बनाकर, भस्म को चांदनी का अंगरंग बनाकर जटिल बुद्धि की दुरूहता को गंगा की तरंगाकुलता देकर, आनंद की सृष्टि करता है। वह हृदय से अत्यंत कोमल, भावुक कवि थे और बुद्धि की प्रखरता में इतिहास के अंधकार में भी उन्होंने जीवन के ऐसे तत्व खोज दिए, जो अच्छा इतिहासकार भी ना खोज पाता। जो इतिहासकार के लिए भी स्पर्धा का विषय होता है। तात्पर्य यह है कि हिंदी साहित्य को जयशंकर प्रसाद के रूप में शिव का प्रसाद ही मिला है

प्रसाद का जन्म माघ शुक्ल दशमी में सुँघनी शादु नाम से प्रसिद्ध काशी के कन्याकुब्ज कुछ हलवाई वैश्य घराने में हुआ था। प्रसाद जी के पितामहा शिवरत्न साधु अत्यंत उदार प्रकृति के थे। उनकी दान शीलता की कहानियां काशी में अब भी प्रचलित है। उनके पिता काशी नरेश की तरह ही सम्मानित थे क्योंकि वे पंडितों गुणियों , गवैयों और कलाविदों का सत्कार सच्चे मन से करते थे। पिता का ही गहरा प्रभाव प्रसाद जी में भी देख सकते हैं। प्रसाद जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही की थी। उन्हें संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी में अधिक रूचि थी। अल्प आयु में संस्कृत और उर्दू का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। बहुत से छंद और दोहे उन्हें कंठस्थ हो गए। पिता के निधन के बाद वे सातवीं कक्षा से आगे नहीं बढ़ पाए। बड़े भाई की मदद से उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी भाषा की पढ़ाई घर पर ही थी। वेद और उपनिषदों का अध्ययन गुरु दीनबंधु ब्रह्मचारी के मार्गदर्शन में किया तथा उस पर अपार ज्ञान भी अर्जित कर लिया।

प्रसाद जी के बारे में एक स्मरणीय अविस्मरणीय किस्सा कहा जाता है- शैशव में अन्नप्रशान संस्कार के बाद पूजा विधि में पुस्तक, बही, मासिक पत्र, लेखनी तथा बच्चों को लुभाने वाले खिलौनों को रख दिया था और बाल प्रसाद ने इन चीजों में से केवल लेखनी उठा कर सबको चकित कर दिया था

इन बातों से यही संकेत मिलता है मानों प्रसाद जी ने अपने भविष्य के प्रति संकेत ही कर दिया था कि आगे चलकर वह एक महान साहित्यकार बनेंगे। प्रसाद की माता धार्मिक सभाओं की महिला थी। वे अपनी माता के साथ विविध धार्मिक स्थलों की यात्रा में भी शामिल हुए। जिनमें जौनपुर विन्ध्याचल साथ ही चित्रकूट नैमिषारण्य, मथुरा, ओंकाररेश्वर, धारा क्षेत्र उज्जैन आदि थे। बौद्ध दर्शन के खासे अध्ययन कर्ता के रूप में भी जाने जाते हैं। उनके विद्वता का प्रभाव उनके साहित्य पर सहज ही देखा जा सकता है।

जयशंकर प्रसाद का पूरा जीवन दुखद घटनाओं का मालिक है उन्हें केवल पारिवारिक ही नहीं बल्कि सांसारिक जीवन में भी अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। पिता के बाद बड़े भाई की भी मृत्यु हो गई। उनका विवाह 20 वर्ष की आयु में श्रीमती विन्ध्यावासनी देवी से हुआ परंतु उनका और प्रसाद का केवल 10 वर्ष का साथ था , यक्षमा की वजह उनकी मौत हो गई। सरस्वती से दूसरा विवाह किया, दुर्भाग्यवश वह भी प्रसुती में चल बसी सरस्वती का साथ केवल एक साल मात्र रहा। तीसरा विवाह कमला देवी से हुआ यानी उनका वैवाहिक जीवन वैवाहिक जीवन सुखद नहीं था।

प्रसाद का साहित्यिक जीवन बड़ा सुखद रहा। प्रारंभ में जब वे सृजन कर रहे थे तब मुंशी कालिंदी प्रसाद और श्री रामानंद से घनिष्ठ मित्रता थी आगे चलकर उन्हें यहां साहित्य की चर्चा करें अनेक साहित्यकार आने लगे। प्रसाद जी के जीवनकाल में ऐसे साहित्यकार काशी में थे, जिन्होंने अपनी कृतियों द्वारा हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि की। खड़ी बोली यानी हिंदी में अपनी रचनाएं लिखकर हिंदी भाषा को श्री संपदा को मौलिक दान से समृद्ध किया। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में लिखकर एक इतिहास ही रच दिया।

कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, झरना, आंसू, लहर, कामायनी तथा प्रेम पथिक उनकी महत्वपूर्ण काव्य कृति है। प्रसाद ने काव्य रचना ब्रजभाषा में आरंभ की थी। लेकिन आगे चलकर खड़ी बोली की ओर अग्रसर हो गए और उनकी प्रसिद्धि खड़ी बोली के मूर्धन्य कवियों में होने लगी और वे युग प्रवर्तक कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनकी कार्य रचनाएं दो भागों को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। काव्य पथ अनुसंधान की रचनाएं

और रस सिद्ध रचनाएं। आंसू, लहर तथा कामायनी रस सिद्ध रचनाएं हैं तो बाकी सब रचनाएं अनुसंधान के अंतर्गत आती हैं। कार्यक्षेत्र में प्रसाद की कीर्ति का मूलाधार कामायनी है। खड़ी बोली का यह अद्वितीय महाकाव्य मनु और श्रद्धा को आधार बनाकर रचित मानवता को विजयिनी बनाने का संदेश देता है। उदाहरण

सुना यह मनु ने मधु गुंजार ,

मधुकरी का -सा जब सानंद

किए मुख नीचा कमल समान

प्रथम कवि का ज्यों सुंदर छंद

अथवा

एक झटका सा लगा सहर्ष

निखरने लगे लूटे -से कौन-

गा रहा यह सुंदर संगीत

कौतूहल रह ना सका फिर मौन

कामायनी का शिल्पविधि, भाषा सौष्ठव एवं भावभिव्यक्ति की दृष्टि से इसकी तुलना खड़ी बोली के किसी भी कवि से नहीं की जा सकती है। यह कृति छायावाद और खड़ी बोली की काव्य गरिमा का ज्वलंत उदाहरण है। सुमित्रानंदन पंत जी इसे हिंदी में ताजमहल के समान मानते हैं

कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में प्रसाद जी आधुनिक ढंग की कहानियों के आरंभयिता माने जाते हैं। सन 1912 में उनकी पहली कहानी ग्राम प्रकाशित हुई। प्रायः तभी से गतिपूर्वक आधुनिक कहानियों की रचनाएं आरंभ हुई। प्रसाद जी ने कुल 72 कहानियां लिखी। जिनमें भावना -प्रधान ऐतिहासिक, प्रागैतिहासिक समस्यामूलक तथा वातावरण प्रधान कहानियां हैं। जिनमें वातावरण प्रदान कहानियां अधिक सफल रही। उनकी सभी कहानियां भावनाओं की मिठास तथा कवित्व से पूर्ण है। प्रसाद जी का भारत के उन्नत अतीत का जीवित वातावरण प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। उनकी कितनी ही कहानियां ऐसी है जिन्होंने आदि से अंत तक भारतीय संस्कृति एवं आदर्शों की रक्षा का सफल प्रयास किया है। आकाशदीप, मधुआ, बिसाती, पुरस्कार, गुंडा, छोटा जादूगर, सालवती स्वर्ग के खंडहर में आंधी , इंद्रजाल आदि श्रेष्ठ कहानियां है। प्रसाद ने केवल तीन उपन्यास लिखे हैं। कंकाल, तितली और इरावती। कंकाल में नागरिक सभ्यता का अंतर दिखाया गया है तो तितली ग्रामीण जीवन के सुधार पर आधारित है और इरावती उपन्यास है और अधूरा उपन्यास है।

प्रसाद जी ने आठ ऐतिहासिक नाटक, तीन पौराणिक नाटक तथा दो भावात्मक नाटक यानी कुल 13 नाटकों की सृजना की। कामना और एक घूंट को छोड़कर ये नाटक मूलतः इतिहास पर आधारित हैं। इनमें महाभारत से लेकर हर्ष के समय तक के इतिहास से सामग्री दी गई है। वे हिंदी के श्रेष्ठ नाटककार है। इनके नाटकों में संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना भरी हुई है। प्रसाद ने अपने दौर के पारसी रंगमंच का खंडन करते हुए भारत के गौरवमय अतीत के अनमोल चरित्र को लेकर नाटक लिखे। चंद्रगुप्त और स्कंदगुप्त आदि उनके प्रसिद्ध नाटक

हैं। जिनमें स्वर्णिम अतीत को सामने रखकर मानो एक सोये हुए देश को जगाने की प्रेरणा दी है। इन नाटकों में कई सुंदर गीत भी मिलते हैं।जो नाटक को और ज्यादा रोचक बनाते हैं -

हिमाद्री तुंग श्रृंग से ,

प्रबुद्ध शुद्ध भारती।

स्वयंप्रभा समुज्जवला,

स्वतंत्रता पुकारती

अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो

प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो बढ़े चलो।

प्रसाद के नाटक चंद्रगुप्त के छठे दृश्य में यह वीर रस की कविता है , जो राष्ट्र और देशभक्ति को उजागर कर रहा है। प्रसाद के नाटकों के बारे में कहा जाता है कि उनके नाटक गंभीर चिंतन के साथ स्वच्छंद काव्यात्मक दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। कथोपकथन स्वाभाविक है किंतु उनकी भाषा संस्कृतगर्भित है। नाटकों में दार्शनिक गंभीरता का बाहुल्य है पर वह गद्यात्मक ना होकर सरस है पर ये नाटक प्रभाव की एकता लाने में पूर्ण सफल है। अपनी कुछ त्रुटियों के बावजूद प्रसाद जी नाटककार के रूप में हिंदी में अप्रतिम है। प्रसाद ने समय-समय पर इंदु पत्रिका में विविध विषयों पर सामान्य निबंध भी लिखे। लेकिन प्रसाद जी को अधिकतर प्रसिद्धि कविता, नाटक और कहानी में ही मिली।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि प्रसाद मूलतः जन्मजात कवि हैं। साहित्य के विविध क्षेत्रों नाटक, काव्य, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि में अपना अनमोल योगदान दिया है। अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति और आदर्श को हमारे सामने रखा है। सत्यं शिवमं सुंदरम का जीता जागता रूप प्रसाद के काव्य में मिलता है। प्रसाद जी का हिंदी साहित्य में योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। अंत में उनके बारे में हम इतना कह सकते हैं-

जो जिंदगी की मुश्किलों से

लड़कर बाहर निकलता है, उसी इंसान का व्यक्तित्व

खूब निखरता है।

डॉ. सुमा टी रोनाडवर

हिन्दी विभाग अध्यक्ष, विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूर-1

Phone: 8088545787